# कक्षा 10 हिंदी

## मित्रता

## गद्यांश आधारित प्रश्नोत्तर

(1) हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप का चाहे उस रूप का करे– चाहे राक्षस बनावे, चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं; क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं; क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई दबाव रहता है, और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है।

*अथवा* हम लोग ........................................................... **लेनी** पड़ती है।

*अथवा* हम लोग .......... ...................................................सहारा रहता है।

**प्रश्न – (i) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।**

**उत्तर-** पाठ– मित्रता। लेखक – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

**प्रश्न – (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या**– शुक्लजी **जी के कथनानुसार**, हमारी अवस्था ऐसी होती है, जैसे कच्ची मिट्टी की मूर्ति होती है जिसे तोड़कर किसी भी प्रकार का रूप दिया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि संसार की

वास्तविकता का ज्ञान न होने के कारण बालक को कैसा भी रूप दिया जा सकता है। कोई दुष्ट व्यक्ति अपना बुरा और अपवित्र प्रभाव डालकर हमें राक्षसों की तरह नीच और दुष्ट बना सकता है। इसके विपरीत यदि हमें अच्छी संगति मिल जाए तो देवताओं की भाँति हमारे जीवन में भी अच्छे गुण आ सकते हैं। **शुक्ल जी का मत** है कि यदि हम बिना सोचे-विचारे उन लोगों की संगति में आ जाते हैं, जिनकी इच्छा शक्ति हमसे अधिक प्रबल है और जिनके संकल्प दृढ़ हैं तो हम अपना विकास किसी भी हैं प्रकार नहीं कर सकते।

**प्रश्न – (iii)'हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं– इस वाक्य में 'हम लोग'से किसकी ओर संकेत किया गया है?**

**उत्तर-** ‘हम लोग कच्ची मिट्टी'की मूर्ति के समान रहते हैं'इस वाक्य में 'हम लोग'से किशोरावस्था के बच्चों की ओर संकेत किया गया है।

**प्रश्न – (iv)व्यक्ति समाज में किस अवस्था में प्रवेश करता है?**

**उत्तर-** व्यक्ति समाज में किशोरावस्था में प्रवेश करता है।

**प्रश्न – (v) दृढ़-संकल्पवाले लोगों का साथ करना बुरा क्यों होता है?**

**उत्तर-** दृढ़-संकल्पवाले लोगों का साथ करना इसलिए बुरा होता है; क्योंकि व्यक्ति उनकी प्रत्येक बात को बिना किसी विरोध के चुपचाप मान लेता है। इससे व्यक्ति का अपना विवेक कुण्ठित होता है। उसकी तर्कशक्ति भी बाधित होती है। इस प्रकार व्यक्ति का व्यक्तित्व कमजोर होता जाता है। एक प्रकार से व्यक्ति दब्बू बन जाता है।

**प्रश्न – (vi) हमें किन लोगों का साथ करना चाहिए?**

**उत्तर-** हमें उन लोगों का साथ करना चाहिए, जो हमारे ही समान इच्छाशक्ति वाले हों; हमारी बातों को चुपचाप स्वीकार न करके उसे तर्क और विवेक की कसौटी पर कसकर ही स्वीकार **अथवा** अस्वीकार करें।

(2) एक प्राचीन विद्वान् का विचार है- 'विश्वासपात्र मित्र से बड़ी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाय उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया। 'विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों में हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे तब हमें उत्साहित करेंगे। सारांश यह है कि वे हमें उत्तमतापूर्वक जीवन निर्वाह करने में हर तरह से सहायता देंगे। सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी से अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक पुरुष को करना चाहिए।

***अथवा*** विश्वासपात्र मित्र ..........................................................उत्साहित करेंगे।

***अथवा*** विश्वासपात्र मित्र ..........................................................कोमलता होती है।

***अथवा*** एक प्राचीन विद्वान्..........................................................उत्साहित करेंगे।

**अथवा** 'विश्वासपात्र मित्र से ................................................. तरह से सहायता देंगे। **[801 (DC) 2023]**

प्रश्न – (i)उपर्युक्त गद्यांश का **सन्दर्भ** लिखिए।

उत्तर: <u>सन्दर्भ -</u> प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'में संकलित पाठ 'मित्रता'से उद्धृत है। इसके रचयिता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

प्रश्न – (ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **<u>प्रथम रेखांकित अंशों की व्याख्या</u>**–आ० शुक्ल के अनुसार, विश्वासपात्र मित्र सदैव विपत्तियों में अपने मित्र की सहायता करके और उसको बुराइयों से बचाकर उसकी सब प्रकार से रक्षा करता है। व्यक्ति को ऐसा मित्र बड़े सौभाग्य से मिलता है। जिस प्रकार से एक अच्छी औषध (दवा) व्यक्ति को भयंकर-से- भयंकर रोग से मुक्ति दिलाकर उसे स्वस्थ और प्रसन्न बनाती है, उसी प्रकार सच्चा व अच्छा मित्र व्यक्ति के दोषों व त्रुटियों को दूर कर तथा प्रत्येक विपत्ति में उसकी सहायता करके उसे सब प्रकार से सुखी और सम्पन्न बनाता है, इसीलिए विश्वासपात्र मित्र को जीवन की औषध भी कहा जाता है।

**<u>द्वितीय रेखांकित अंशों की व्याख्या</u>**- जिस प्रकार एक कुशल वैद्य अथवा चिकित्सक किसी व्यक्ति के समस्त शारीरिक रोगों को समझकर, उसका निदान करके उसे नीरोगी बनाता है, ठीक उसी प्रकार सच्चा मित्र हमें

कुमार्ग से हटाकर अच्छे रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित करता है। वह अपने मित्र से उसके दोषों एवं गलतियों के लिए कटु वचन नहीं कहता, उसकी आलोचना नहीं करता। सच्चा मित्र माता के समान स्नेह, कोमलता और धैर्य का प्रतीक वह माता जैसा स्नेह देकर हमें कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग की ओर ले जाता है। अतः हमें ऐसा प्रयास करना चाहिए कि हमें विश्वासपात्र व सच्चा मित्र प्राप्त हो।

**प्रश्न– (iii) विश्वासपात्र मित्र की तुलना किस-किससे की गई है?**

*अथवा* **लेखक ने सच्चे मित्र की तुलना किससे और क्यों की है?**

*अथवा* **विश्वासपात्र मित्र की तुलना किससे की गई है?**

**उत्तर-** लेखक ने विश्वासपात्र मित्र की तुलना जीवन की औषध से की है। क्योंकि चिकित्सक किसी व्यक्ति के समस्त शारीरिक रोगों को समझकर, उसका निदान करके उसे नीरोगी बनाता है, ठीक उसी प्रकार सच्चा मित्र हमें कुमार्ग से हटाकर अच्छे रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

**प्रश्न – ((iv)सच्ची मित्रता कैसी होती है?**

**उत्तर-** सच्ची मित्रता में उत्तम-से-उत्तम वैद्य की-सी निपुणता होती है, उसमें अच्छी से अच्छी माता का-सा धैर्य तथा कोमलता होती है।

**प्रश्न – (v) हमें किन लोगों को अपना मित्र बनाना चाहिए?**

*अथवा* **एक सच्चा मित्र किसे कह सकते हैं?**

*अथवा* **'मित्रता'पाठ के आधार पर विश्वासपात्र मित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**

*अथवा* **उत्तम मित्र से क्या अपेक्षा रखनी चाहिए?**

*अथवा* **हमें अपने मित्रों से कौन-सी आशा रखनी चाहिए?**

*अथवा* **लेखक के अच्छे मित्र के क्या-क्या कर्त्तव्य बताए हैं?**

**उत्तर-** हमें उन लोगों को अपना मित्र बनाना चाहिए जो उत्तम संकल्पों में हमें दृढ़ रखें, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँ, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करें, कुमार्ग के प्रति सचेत करें और हतोत्साहित होने पर हमें उत्साहित करें।

**प्रश्न– (vi) सच्चा मित्र हमारी किस प्रकार सहायता करता है?**

**उत्तर-** सच्चा मित्र उत्तमतापूर्वक जीवन निर्वाह करने में हर संभव हमारी सहायता करता है।

**(3) सुन्दर प्रतिमा, मनभावनी चाल और स्वच्छन्द प्रकृति ये ही दो-चार बातें देखकर मित्रता की जाती है; पर जीवन-संग्राम में साथ देने वाले मित्रों में इनसे कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिससे हम स्नेह न कर सकें, जिससे अपने छोटे-मोटे काम तो हम निकालते जाएँ, पर भीतर ही भीतर घृणा करते रहें? मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें; भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति पात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए। ऐसी सहानुभूति जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे। मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो मित्र एक ही प्रकार के कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। इसी प्रकार प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक या वांछनीय नहीं है। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है। राम धीर और शान्त प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे, पर दोनों भाइयों में अत्यन्त प्रगाढ़ स्नेह था। उदार**

**तथा उच्चाशय कर्ण और लोभी दुर्योधन के स्वभावों में कुछ विशेष समानता न थी, पर उन दोनों की मित्रता खूब निभी।**

**अथवा** मित्र केवल.......................................................................मित्रता रही है।

**अथवा** मित्र केवल .......................................................................वांछनीय नहीं है।

**अथवा** मित्र सच्चे पथ.......................................................................मित्रता रही है।

**अथवा** मित्रता के लिए यह आवश्यक .......................................................मित्रता खूब निभी। **[801 (DE,DG) 2023]**

**प्रश्नः (i)उपर्युक्त गद्यांश का** सन्दर्भ लिखिए।

**उत्तर- <u>सन्दर्भ</u>-** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'में संकलित पाठ 'मित्रता'से उद्धृत है। इसके लेखक 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी हैं।

**प्रश्न – (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** **रेखांकित अंश की व्याख्या–** आ० शुक्लजी के अनुसार सच्चा मित्र वह नहीं है, जिसके गुणों अथवा कार्यों की हम प्रशंसा तो करते हैं, किन्तु अपने मन से उसे प्रेम नहीं करते हैं। सच्चा मित्र वही है, जिसे हम हृदय से प्रेम करें। यदि किसी व्यक्ति से हम अपने छोटे-मोटे काम तो निकालते रहें, किन्तु मन-ही-मन उसके प्रति घृणा का भाव बनाए रखें तो उसे हम अपना मित्र नहीं कह सकते। मित्र के प्रति यदि मन में सच्चा प्रेम नहीं है तो वह मित्र नहीं है। सच्चे मित्र का एक विशेष गुण है – विश्वसनीयता। मित्र को एक ऐसा पथ-प्रदर्शक होना चाहिए जिसके बताए मार्ग पर चलकर हम अपने जीवन का विकास कर सकें। ऐसा व्यक्ति मित्र कहलाने के योग्य है। अत: मित्र वही है, जो हमारे लिए पूरी तरह विश्वसनीय हो तथा सगे भाई के समान हमारा हितैषी और शुभचिन्तक हो। दो मित्रों के बीच का प्रेम भी कपट तथा स्वार्थ पर आधारित नहीं होना चाहिए। मित्र के लिए सहानुभूति का गुण एक आभूषण के समान है। मित्रों के बीच सहानुभूति का गुण दिखावामात्र नहीं होता, वरन् उनमें सुख-दुःख के सभी अवसरों पर समान भाव से सहानुभूति पाई जाती है। मित्रता के लिए यह भी आवश्यक नहीं है कि दो मित्र समान रुचि व समान कार्य से सम्बद्ध हों। दोनों के आचरण एवं देह तथा बुद्धि की प्रकृति भी समान होना आवश्यक नहीं है।

**प्रश्न – (iii) मित्रता प्रायः किस आधार पर की जाती है?**

**उत्तर-** किसी की सुन्दर सूरत, मन को लुभानेवाली चाल और स्वच्छन्द स्वभाव के आधार पर ही प्रायः मित्रता की जाती है।

**प्रश्न – (iv) किसे मित्र नहीं कहा जा सकता?**

**उत्तर-** जिस व्यक्ति से हम स्नेह नहीं कर सकते, उसे मित्र नहीं कहा जा सकता, भले ही हम उसके गुणों का कितना ही गुणगान क्यों न करें। जिस व्यक्ति से हम अपने छोटे-मोटे काम निकलवाने के बाद भी भीतर ही भीतर उससे घृणा करते हों, उसे भी मित्र नहीं कहा जा सकता।

**प्रश्न – (v) सच्चा मित्र कैसा होना चाहिए?**

**उत्तर-** मित्र ऐसा होना चाहिए, जो व्यक्ति को सच्चे पथ-प्रदर्शक की भाँति सही मार्ग पर चलाए, सब प्रकार से विश्वास के योग्य हो, भाई के समान प्रेम करनेवाला हो और जो हमसे सच्ची सहानुभूति रखे।

**प्रश्न – (vi) हमारे और हमारे मित्र के बीच कैसी सहानुभूति होनी चाहिए?**

**उत्तर-** मित्र में ऐसी सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए कि एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे।

**प्रश्न – (vii) लेखक ने अच्छे मित्र की क्या विशेषताएँ बताई हैं?**

**उत्तर-** लेखक के अनुसार सच्चा मित्र, जो व्यक्ति को सच्चे पथ-प्रदर्शक की भाँति सही मार्ग पर चलाता है, वह सब प्रकार **से विश्वसनीय** होता है, भाई के समान प्रेम करनेवाला और सच्ची सहानुभूति रखनेवाला होता है।

**प्रश्न – (viii) राम और लक्ष्मण के स्वभाव में क्या अंतर है?**

**उत्तर-** राम वीर और शांत प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे।

**(4) मित्र का कर्त्तव्य इस प्रकार बताया गया है— उच्च और महान् कार्य में इस प्रकार सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी निज की सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।'यह कर्त्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़-चित्त और सत्य-संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए, जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा थां। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।**

*अथवा* **मित्र का कर्त्तव्य ..........................................................पकड़ा था।**

*अथवा* **उच्च और महान् कार्य.........................................................................धोखा न होगा।**

**प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का** सन्दर्भ लिखिए।

**उत्तर- सन्दर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'मित्रता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

**प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या** - मित्र के कर्त्तव्य आलोक में हमें दृढ़ चित्त और सत्य-संकल्पवाले लोगों को ही अपना मित्र बनाना चाहिए। मित्र का चुनाव करते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम उसी को अपना मित्र बनाएँ, जो आत्मबल से युक्त हो। श्री रामचंद्र जी की आत्मशक्ति के विषय में विश्वास हो जाने पर ही वानर राज सुग्रीव ने उनका **सहारा लिया** था। श्रीराम की शक्ति के बल पर ही वह अपना राज्य और अपनी पत्नी को प्राप्त कर सका। मित्र का चुनाव करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मित्र ऐसा हो, जिसका समाज में सम्मान हो या जो सत्य में निष्ठा रखनेवाला हो। निष्कपट, सभ्य, परिश्रमी एवं सत्यनिष्ठ मित्र कभी अपने मित्र को धोखा नहीं दे सकता। ऐसे सच्चे मित्र के सहारे हम अपने जीवन का निर्वाह भली-भाँति कर सकते हैं।

**प्रश्न- (iii)मित्र का क्या कर्त्तव्य होना चाहिए?**

अथवा **मित्र का कर्त्तव्य स्पष्ट कीजिए।**

अथवा **अच्छे मित्र का क्या कर्त्तव्य होना चाहिए?**

अथवा **मित्र का कर्त्तव्य कैसा होना चाहिए?**

**उत्तर-** मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्र का साहस तथा उत्साहवर्द्धन करके उच्च और महान् कार्यों में उसकी इस प्रकार से सहायता करे कि वह अपनी सामर्थ्य से बाहर जाकर उन कार्यों को पूरा करे।

**प्रश्न- (iv)मित्र के कर्त्तव्य का निर्वाह कौन-सा व्यक्ति कर सकता है?**

**उत्तर-** दृढ़ चित्त और सत्य-संकल्पवाला व्यक्ति ही मित्र के कर्त्तव्य का निर्वाह कर सकता है।

**प्रश्न- (v)हमें मित्र के रूप में किसका पल्ला किस प्रकार से पकड़ना चाहिए?**

**उत्तर-** हमें मित्र के रूप में अपने से अधिक आत्मबलवाले व्यक्ति का पल्ला वैसे ही पकड़ना चाहिए, जिस प्रकार से सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था।

**प्रश्न- (vi)मित्र कैसा और क्यों होना चाहिए?**

**उत्तर-** मित्र सत्यनिष्ठ, प्रतिष्ठित, मृदुल, शुद्ध हृदयवाला, पुरुषार्थी **व** शिष्ट होना चाहिए, जिससे हम उस पर यह भरोसा और विश्वास कर सकें कि वह हमें किसी प्रकार का धोखा नहीं देगा।

(5) उनके लिए न तो बड़े-बड़े वीर अद्भुत कार्य कर गए हैं और न बड़े-बड़े ग्रन्थकार ऐसे विचार छोड़ गए हैं, जिनसे मनुष्य जाति के हृदय में सात्त्विकता की उमंगें उठती हैं। उनके लिए फूल-पत्तियों में कोई सौन्दर्य नहीं, झरनों के कल-कल में मधुर संगीत नहीं, अनन्त सागर-तरंगों में गम्भीर रहस्यों का आभास नहीं, उनके भाग्य में सच्चे प्रयत्न और पुरुषार्थ का आनन्द नही। उनके भाग्य में सच्ची प्रीति का सुख और कोमल हृदय की शान्ति नहीं। जिनकी आत्मा अपने इन्द्रिय-विषयों में ही लिप्त है; जिनका हृदय नीचाशयों और कुत्सित विचारों से कलुषित है, ऐसे नाशोन्मुख प्राणियों को दिन-दिन अन्धकार में पतित होते देख कौन ऐसा होगा जो तरस न खाएगा? ऐसे प्राणियों का साथ नहीं करना चाहिए।

*अथवा* उनके लिए फूल..........................................................................नहीं करना चाहिए।

**प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का** सन्दर्भ लिखिए।

**उत्तर- सन्दर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'में संकलित पाठ 'मित्रता'से उद्धृत है। इसके रचयिता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

**प्रश्न- (ii)रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** **रेखांकित अंशों की व्याख्या** - आचार्य शुक्ल के अनुसार आचरणहीन युवकों को प्रकृति में किसी भी प्रकार का सौन्दर्य दिखाई नहीं देता, करते झरनों में उन्हें मधुर संगीत की अनुभूति नहीं होती। सागर की अनन्त लहरों में छिपे जीवनोपयोगी ज्ञान का भी उन्हें कोई आभास नहीं होता। इस प्रकार के दुर्भाग्यशाली युवक अपने सद्प्रयासों एवं पुरुषार्थ पर आधारित उपलब्धि से वंचित होते हैं।

आचरणहीन व्यक्तियों के लिए संसार के महान् व्यक्तियों, उच्च आदर्शों, पुरुषार्थ, सच्चे प्रेम, सात्त्विकता, ज्ञानानुभूति आदि का अस्तित्व ही नहीं होता। ये व्यक्ति सदैव अपने नीच उद्देश्यों की पूर्ति में लगे रहते हैं। बुरे विचारों के कारण इनका हृदय कलुषित हो चुका है। लेखक के अनुसार ऐसे व्यक्ति विनाश की ओर अग्रसर हैं और दया के पात्र हैं। इसलिए ऐसे लोगों की संगति नहीं करनी चाहिए।

**प्रश्न- (iii)लेखक किस व्यक्ति पर तरस खाने की बात कह रहा है?**

**उत्तर-** लेखक उस व्यक्ति पर तरस खाने की बात कह रहा है, जो अपने इन्द्रिय-विषयों में ही लिप्त है और जिसका हृदय नीचाशयों एवं कुत्सित विचारों से कलुषित है।

**प्रश्न- (iv)हमें किस प्रकार के प्राणियों का साथ नहीं करना चाहिए?**

**उत्तर-** जिनकी आत्मा अपने इन्द्रिय विषयों में ही लिप्त है; जिनका हृदय नीचाशयों और कुत्सित विचारों से कलुषित है, ऐसे नाशोन्मुख प्राणियों का साथ नहीं करना चाहिए।

**(6) कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देनेवाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जाएगी। [2024 (801 HA, HC, HG)]**

**प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

**उत्तर- सन्दर्भ-** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के **'गद्य-खण्ड'** में संकलित पाठ **'मित्रता'** से उद्धृत है। इसके रचयिता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

**प्रश्न- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर- रेखांकित अंशों की व्याख्या-** आ० शुक्ल कहते हैं कि बुरे और दुष्ट लोगों की संगति एक भयंकर बुखार के समान है। जैसे भयानक ज्वर शरीर की सम्पूर्ण शक्ति को कम कर देता है, वैसे ही दुष्टों की संगति में पड़ा

व्यक्ति अपनी बुद्धि, विवेक, सदाचार आदि को भी खो बैठता है। बुरी संगति के प्रभाव में पड़कर व्यक्ति अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित का भी ज्ञान खो देता है। विशेष रूप से युवावस्था में जो लोग बुरी संगति में पड़ जाते हैं, वे कभी उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो पाते। सुसंगति एक ऐसी बाँह के समान है, जो गिरे हुए को उठाती है तथा गिरते हुए को सहारा देती है, अर्थात् सत्संगति मिल जाने पर बुरी संगति में पड़ा हुआ व्यक्ति भी उन्नति की ओर बढ़ सकता है।

**प्रश्न- (iii)गद्यांश में क्या सन्देश दिया गया है?**

**उत्तर-** गद्यांश में कुसंग को त्यागने और सत्संगति **प्राप्त** करने का सन्देश दिया गया है।

**प्रश्न- (iv)कुसंग के ज्वर को सबसे भयानक क्यों कहा गया है?**

*अथवा* **कुसंग का क्या प्रभाव होता है?**

*अथवा* **कुसंग का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर किस प्रकार पड़ता है?**

**उत्तर-** किसी भी प्रकार का भयानक ज्वर व्यक्ति की शारीरिक शक्ति का नाश करके उसे दुर्बल बनाता है, जबकि कुसंग का ज्वर उसकी नीति, सद्वृत्ति और बुद्धि का नाशकर उसकी आत्मा को दुर्बल बनाता है, इसीलिए कुसंग के ज्वर को सबसे भयानक कहा गया है।

**प्रश्न- (v) अच्छी संगति से होनेवाले लाभों को उदाहरण देकर समझाइए।**

**उत्तर-** अच्छी संगति व्यक्ति को सहारा देनेवाली भुजा के समान होती है, जो कि व्यक्ति को अवनति के गड्ढे में गिरने से बचाकर उसे उन्नति की ओर अग्रसर करती है।

**प्रश्न- (vi) बुरी संगति से व्यक्ति की क्या हानि होती है?**

**उत्तर-** बुरी संगति व्यक्ति को निरन्तर अवनति के गड्ढे में गिराती जाती है; क्योंकि वह उसकी नीति, सद्वृत्ति और बुद्धि का नाश करती है।

**प्रश्न – (vii) युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो उसका क्या परिणाम होगा?**

**उत्तर-** युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो उसका परिणाम यह होगा कि उसे पैरों में बँधी चक्की के समान लगातार अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी।

**प्रश्न – (viii) कुसंग की तुलना किससे की गयी है?**

**उतर-** कुसंग की तुलना ज्वर से की गयी है।

**प्रश्न – (ix) सुदृढ़ बाहु का क्या अर्थ है?**

**उतर-** सुदृढ़ बाहु का अर्थ है मजबूत भुजा।

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज

(7) बहुत से लोग तो इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता, जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनके घड़ीभर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है; क्योंकि उनके ही बीच में ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। इस बात को प्रायः सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं उतनी जल्दी कोई गम्भीर या अच्छी बात नहीं।

**प्रश्न- (i) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।**

उत्तर - **पाठ** - मित्रता। **लेखक**- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

**प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या**— कुछ लोग इतनी बुरी मानसिकता के होते हैं कि उन्हें अश्लीलता के सिवाय कुछ सूझता ही नहीं। ऐसे लोग प्रतिपल अश्लील बातें करते हैं। इनका कुछ समय का साथ ही व्यक्ति

की बुद्धि को भ्रष्ट बना देता है। ये लोग ऐसी भद्दी और नीच बातें करते हैं, जिनको भले व्यक्ति द्वारा न तो सुना जाना चाहिए और न ही कहा जाना चाहिए। ये बातें व्यक्ति के पवित्र मन को अपवित्र बना देती हैं।

**प्रश्न- (iii)'बहुत से लोग इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते, 'यहाँ पर इसे'शब्द द्वारा किस प्रसंग का संकेत किया गया है?**

**उत्तर-** 'बहुत से लोग इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते', यहाँ पर 'इसे'शब्द द्वारा इंग्लैण्ड के एक विद्वान् के जीवन से सम्बन्धित उस प्रसंग का संकेत किया गया है, जब युवावस्था में उसे राज-दरबारियों में जगह नहीं मिली। इस पर वह जिन्दगीभर अपने भाग्य की सराहना करता रहा।

**प्रश्न- (iv)आध्यात्मिक उन्नति के लिए क्या आवश्यक है?**

**उत्तर-** आध्यात्मिक उन्नति के लिए अच्छे लोगों की संगति आवश्यक है।

**प्रश्न- (v)बुराई की प्रकृति कैसी होती है?**

**उत्तर-** बुराई की प्रकृति अटल भाव की होती है, यही कारण है कि बुरी बातें हमारे भीतर बहुत दिनों तक टिकती हैं।

**प्रश्न- (vi)व्यक्ति पर बुरी बात का प्रभाव जल्दी होता है, इसे उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए |**

**उत्तर-** व्यक्ति पर बुरी बात का प्रभाव जल्दी होता है, इसीलिए भद्दे और फूहड़ गीत जितनी जल्दी याद होते हैं, उतनी जल्दी अच्छी बातें याद नहीं होतीं।

**(8) सावधान रहो, ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा।** अथवा **तुम्हारे चरित्र - बल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें बकनेवाले आगे चलकर आप सुधर जायँगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता है कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जायगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी; क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है! तुम्हारा विवेक कुंठित हो जायगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जायगी। अन्त में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे; अतः हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगत की छूत से बचो।**

अथवा **जब एक बार..............................................................छूत से बचो।**

अथवा **जब एक बार ...............................................................रह जाएगी।**

**प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

**उत्तर- सन्दर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'मित्रता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

**प्रश्न- (ii)रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।**

**प्रश्न- (iii)रेखांकित अंशों की व्याख्या-** जब मनुष्य किसी बुराई की ओर एक कदम बढ़ा देता है और वह उस बुराई को एक बार अपना लेता है तो वह फिर यह सोचना छोड़ देता है कि वह जिस बुराई की ओर बढ़ रहा है, उससे उसके चरित्र पर कितना बड़ा कलंक लग सकता है, इससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा और चरित्र का कितना पतन हो सकता है। धीरे-धीरे व्यक्ति बुराइयों का आदी हो जाता है। इस प्रकार बुराई के प्रति व्यक्ति के मन में स्थित घृणा कम होती जाती है।

जब हमारी उचित-अनुचित का निर्णय करनेवाली विवेक-शक्ति समाप्त होती जाती है और हमें भले-बुरे की कोई पहचान नहीं रह जाती। इसके परिणामस्वरूप अन्त में व्यक्ति बुराई का भक्त होकर उसमें लिप्त हो जाता है और उससे उसे कोई चिढ़ अथवा घृणा भी नहीं होती। इसलिए स्वयं को बुराई से बचाए रखने का एकमात्र उपाय यही है कि व्यक्ति को बुरी संगति से बचना चाहिए।

**प्रश्न- (iv)लेखक यहाँ किस बात के प्रति सावधान रहने को कहता है?**

**उत्तर-** लेखक उन लोगों के प्रति सावधान रहने को कहता है, जो फूहड़, अश्लील और अपवित्र बातें करते हैं और इन बातों से हमें हँसाना चाहते हैं।

**प्रश्न- (v)'कीचड़ में पैर डालने'से क्या तात्पर्य है?**

**उत्तर-** 'कीचड़ में पैर डालने से तात्पर्य बुराई में प्रवेश करने से है।

**प्रश्न- (vi)बुरे लोगों से कब हमारी घृणा कम हो जाएगी?**

**उत्तर-** जब हम निरन्तर बुरे लोगों के सम्पर्क में रहते हैं तो हम उनकी बुरी बातों के अभ्यस्त हो जाते हैं, तब उन लोगों के प्रति हमारी घृणा कम हो जाती है।

**प्रश्न- (vii)बुरी संगति से व्यक्ति को क्या हानि होती है?**

*अथवा* **विवेक कुंठित हो जाने से मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?**

*अथवा* **बुरी बातों का क्या प्रभाव पड़ता है?**

**उत्तर-** बुरी संगति से व्यक्ति का विवेक कुण्ठित हो जाता और उसे भले- की पहचान नहीं रह जाती।

**प्रश्न- (viii)लेखक ने हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का क्या उपाय सुझाया** है?

*अथवा* **लेखक ने उपर्युक्त गद्यांश में क्या सन्देश दिया** *अथवा* **सबसे अच्छा उपाय क्या है?**

**उत्तर-** लेखक ने हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का उपाय बुरी संगत की छूत से बचना सुझाया है।

**प्रश्न- (viii) मनुष्य में भले-बुरे की पहचान करने की शक्ति कब आती है?**

**उत्तर-** विवेक उत्पन्न होने पर मनुष्य में भले-बुरे की पहचान करने की शक्ति आती है।

||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम्||

(8) यह कोई बात नहीं कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है। समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं, जो गुण हम में नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों। चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। [801 (DA) 2023]

**प्रश्न – (i) उपरोक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

**उत्तर-** उपर्युक्त

**प्रश्न – (ii) गद्यांश के रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** समाज में लोग विभिन्नता देखकर एक-दूसरे की ओर इसलिए आकर्षित होते हैं ताकि उनसे वे उन गुणों का लाभ उठा सकें, जिन गुणों की कमी वे अपने अन्दर महसूस करते हैं; जैसे-निर्बल व्यक्ति बलवान से, धैर्यवान व्यक्ति उत्साही व्यक्ति से मित्रता करना चाहता है।

**प्रश्न – (iii) क्या देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं?**

**उत्तर-** समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं, जो गुण हम में नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों।

************